इरावती कर्वे **(1913 -1970)**

इरावती कर्वे का जन्म महाराष्ट्र के एक प्रबुद्ध ब्राह्मण परिवार में हुआ था।

उन्होंने एम. ए. मुंबई विश्वविद्यालय में जी.एस. घूर्ये के नेतृत्व में किया और पी.एच.डी बर्लिन से यूजेन फिशल के निर्देशन में किया। शिक्षा समाप्ति के बाद सन **1939** से लेकर अपनी मृत्यु तक इरावती कर्वे पुणे के प्रख्यात डेक्कन कॉलेज के स्नातकोत्तर विभाग और शोध संस्थान में कार्यरत रही। उन्हें सन **1939** में **"**भारतीय विज्ञान कांग्रेस**"** के मानव शास्त्र विभाग के अध्यक्ष निर्वाचित होने का भी गौरव प्राप्त किया। उन्हें संस्कृत, पाली और तमिल का भी ज्ञान था।

इरावती कर्वे के अध्ययन अनुसंधान के प्रमुख विषय भारत की जनसंख्या में प्रजाति के तत्व जाति की उत्पत्ति , ग्रामीण और नगरीय समुदायों का अध्ययन नातेदारी व्यवस्थाएं जाति समूह तथा पश्चिमी भारत की प्रादेशिक संस्कृति की विशेषताएं रही हैं

उन्होंने मानवमितीय माप विधि का प्रयोग करते हुए भौतिक मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेक अध्ययन किए हैं। इस अध्ययन में उन्होंने सामाजिक समूहों को भाषा के आधार पर विभाजित करें इनके सामान्य व्यवसाय के आधार पर उनके उद्गम का पता लगाने का प्रयास किया है।

कर्वे ने बताया कि किस प्रकार कुछ बहिर्विवाह ही समूहों ने जाति का रूप ले लिया।

श्रीमती कर्वे भारत में नातेदारी की सामाजशास्त्रीय- मानव शास्त्री अध्ययन की अगुवा रही है । इस संबंध में उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति **"**भारत में नातेदारी संगठन**, 1953 "** रही है। इसमें उन्होंने भारत को चार प्रमुख क्षेत्रों में बॉटकर उनकी नातेदारी व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

भारत में **"**नातेदारी संगठन**"** नामक कृति में इन्होंने संयुक्त परिवार का विश्लेषण करते हुए सह निवास, सह भोज, सह उपासना, साझा संपत्ति और नातेदारी संबंधों में आबद्धता को इस प्रकार के परिवारों की प्रमुख विशेषता बताया है।

नातेदारी संगठन के अतिरिक्त इरावती कर्वे की एक अन्य पुस्तक **"**हिंदू समाज एक विवेचन**"** भी चर्चा का विषय रही है । इस पुस्तक में कर्वे ने भारतीय समाज के प्रमुख पक्ष जाति व्यवस्था का विश्लेषण किया है। **"**जाति के विस्तारित नातेदारी समूह या एक विस्तारित परिवार है।**"** जाति की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने इसकी दो प्रमुख विशेषताएं बताई हैं **-** अंतर्विवाही समूह तथा जाति का एक पारंपरिक या पुश्तैनी व्यवसाय।

इरावती कर्वे अपने गुरु जी.एस. घूर्ये की भांति कर्वे ने भी हिंदू समाज सामाजिक संस्थाएं मूल्यों कर्मकांडो में प्रतीक वाद के साथ-साथ लोकगीतों कथाओं और महाकाव्यों के विवेचन हेतु भारत विद्या शास्त्र संबंधी सभी स्रोत सामग्री का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है।

कर्वे ने भारतीय सामाजिक संरचना के अध्ययन के बारे में बताया है कि जाति व्यवस्था संयुक्त परिवार और ग्रामीण समुदाय भारतीय सामाजिक संरचना के तीन प्रमुख स्तंभ है।

महाभारत पर लिखी गई उनकी अंतिम एक मराठी रचना **"**युगांतर**"** के लिए उन्हें साहित्य अकादमी और महाराष्ट्र सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

प्रमुख कृतियां **:-**

१**-** किनशिप आर्गनाइजेशन इन इंडिया**, 1953**।

२**-** हिंदू सोसायटी **,1961**।